ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 16 अंक 27 कुल पृष्ठ-8 8 से 14 अप्रैल, 2021 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853122 सम्वत् 2078 चै. कृ.-11

गुरुकुल आश्रम महाविद्यालय आमसेना उड़ीसा का वार्षिक समारोह 8 व 9 मार्च, 2021 को उत्साह के साथ मनाया गया

इस अवसर पर विविध सम्मेलनों के अतिरिक्त गुरुकुल के ब्रह्मचारियों तथा ब्रह्मचारिणियों द्वारा भव्य व्यायाम प्रदर्शन विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से ही संस्कृति की रक्षा होगी

– स्वामी धर्मानन्द

वैदिक संस्कृति को अपनाकर भारत विश्व गुरु का गौरव प्राप्त कर सकता है

– स्वामी आर्यवेश

गुरुकुल महाविद्यालय आमसेना, जिला–नवापारा, उड़ीसा का वार्षिक समारोह गत 8 व 9 मार्च, 2021 को भव्यता के साथ आयोजित हुआ। इस अवसर पर गुरुकुल के संस्थापक एवं संचालक तपोनिष्ठ संन्यासी पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी महाराज के सान्निध्य में विविध सम्मेलनों का आयोजन किया गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् के मंत्री व गुरुकुल महाविद्यालय पौंधा देहरादून के आचार्य डॉ. धनंजय जी, भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् के महामंत्री श्री कैलाश कर्मठ जी आदि के अतिरिक्त गुरुकुल आमसेना की विभिन्न इकाईयों के आचार्य, छात्र व छात्राएँ, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, छत्तीसगढ़ एवं उड़ीसा के अन्य जिलों से गणमान्य आर्यजन समारोह में सम्मिलित हुए।

8 मार्च, 2021 को प्रातः यज्ञ के द्वारा कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ और 10 बजे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने ध्वजारोहण करके समारोह का विधिवत उद्घाटन किया। इस दो दिवसीय समारोह में विविध सम्मेलनों का आयोजन किया गया था जिसमें राष्ट्ररक्षा सम्मेलन, गुरुकुल शिक्षा सम्मेलन, आर्य सम्मेलन तथा व्यायाम सम्मेलन आदि प्रमुख थे। सभी सम्मेलनों में जहाँ विद्वानों के सारगर्भित व्याख्यान हुए वहीं गुरुकुल के ब्रह्मचारियों एवं ब्रह्मचारिणियों ने भी भजनों एवं व्याख्यानों की प्रस्तुति देकर श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। छात्र एवं छात्राओं ने अंग्रेजी, संस्कृत, हिन्दी एवं उड़िया भाषा में अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किये और कई पारितोषिक भी प्राप्त शेष पृष्ठ 4 पर

पुनः घातक होते जा रहे कोरोना वायरस से पूर्णतया सावधान तथा सुरक्षित रहते हुए आर्य समाज की गतिविधियों को सुचारू ढंग से चलायें

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं तथा आर्य समाजों के पदाधिकारियों से मार्मिक अपील

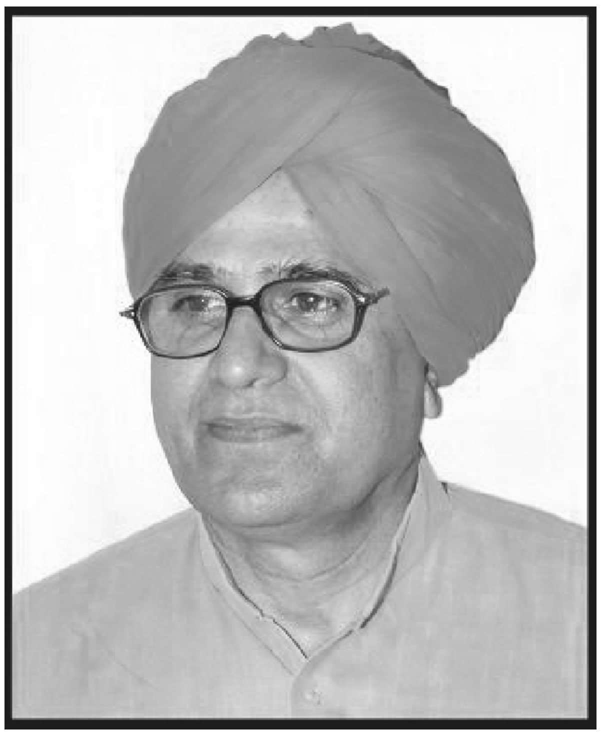

वर्तमान समय में भारत के अधिकांश प्रदेशों में कोरोना वायरस का संक्रमण पुनः अपने चरम पर पहुँचता जा रहा है। इसका प्रभाव आर्य समाज तथा आर्य समाज से सम्बन्धित कार्यक्रमों पर भी पड़ना स्वाभाविक है।

वर्तमान में कोरोना वायरस की विभीषिका के कारण आज परिस्थितियाँ बदल गई हैं तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों, उद्देश्यों तथा समाज सुधार का कार्य कुछ शिथिल पड़ता जा रहा है। इन बदली हुई परिस्थितियों में आर्य समाज के कार्यों को सुचारू रूप से चलाने के लिए कुछ विशेष प्रयास करना आवश्यक हो गया है। मेरा समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं तथा आर्य समाज के पदाधिकारियों से निवेदन है कि वे इलेक्ट्रानिक मीडिया, फेसबुक, यू–ट्यूब तथा जूम एप आदि माध्यमों से अपने प्रचार तंत्र को सुचारू ढंग से चलाने का कार्य करें। प्रतिदिन प्रातः सायं संन्ध्या यज्ञ आदि का कार्यक्रम, समय–समय पर महापुरुषों के जन्मदिवस तथा आर्य पर्वों पर विशेष रूप से कार्यक्रम बनायें तथा आर्य समाज के सदस्यों, क्षेत्र के बुद्धिजीवियों तथा अन्य महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों को टेलीफोन के माध्यम से सूचित करें तथा उन्हें जूम एप के माध्यम से जुड़ने के लिए प्रेरित करें। इस कार्य में विद्वानों, भजनोपदेशकों, संन्यासियों आदि को प्रमुखता से शामिल करें तथा उनके प्रवचन, भजनोपदेश तथा अन्य सामाजिक गतिविधियों में उनका सहयोग लें। समय–समय पर सामाजिक, धार्मिक व राष्ट्रीय मुद्दों को लेकर भी कार्यक्रम आयोजित करें तथा लोगों को लाभान्वित करने का प्रयास करें। सोशल मीडिया के माध्यम से आर्य समाज के प्रचार–प्रसार को विश्वव्यापी बनाया जा सकता है। इस प्रकार के कार्यक्रमों से जनता में जागृति आयेगी और आर्य समाज का कार्य सुचारू रूप से चलने लगेगा। इन सब कार्यक्रमों से आर्य समाज को शक्ति भी मिलेगी। हमारे पास कार्यक्रम होगा, हमारे अन्दर इच्छाशक्ति होगी और वर्तमान वैज्ञानिक साधनों का उपयोग करना जानेंगे तो कोई कारण नहीं है कि हम आर्य समाज को उस उद्देश्य प्राप्ति की ओर न ले जा सकें जिसे लेकर इसकी स्थापना की गई है।

इस संक्रमण काल में हर आर्य समाज एक नये संकल्प के साथ सक्रिय होकर कार्य करना प्रारम्भ करे। जूम एप एक ऐसा माध्यम है जिसके प्रयोग से हम पर्याप्त लोगों तक अपनी आवाज पहुँचा सकते हैं और उन सभी लोगों को प्रेरित कर सकते हैं कि वे भी अपने–अपने माध्यम से अन्य लोगों को इस कार्यक्रम के साथ जोड़ें। वेद प्रचार, समाजसेवा, कुरीति निवारण, सामाजिक जागरण आदि कार्यों में निष्ठा के साथ लगना होगा। सोशल मीडिया के माध्यम से विभिन्न संगोष्ठियाँ, शंका–समाधान, बच्चों के चारित्रिक विकास के कार्यक्रम, महापुरुषों से सम्बन्धित कार्यक्रम तथा युवाओं के चरित्र निर्माण के कार्यक्रम की योजना बनाकर कार्यक्रम किये जाने चाहिए। युवाओं को जोड़ने में विशेष रुचि दिखानी होगी। युवा शक्ति को आत्मबल, शक्तिबल तथा धार्मिकता प्रदान कर समाज की बुराईयों से लड़ने के लिए प्रेरित किया जा सकेगा। नैतिकता, धार्मिकता, देशभक्ति तथा स्वाध्याय के साथ–साथ नेतृत्व के गुणों का विकास करने वाले कार्यक्रमों की अधिकता होनी चाहिए।

इसके अतिरिक्त प्रातः–सायं संन्ध्या, यज्ञ आदि के आकर्षक कार्यक्रम करके फेसबुक तथा यू–ट्यूब के माध्यम से डाले जा सकते हैं। अपने प्रत्येक सदस्य को तथा परिचितों को प्रेरित करें कि वे अपने घरों में परिवार सहित नियमित रूप से दैनिक यज्ञ करें और यज्ञ में औषधीय गुणों से युक्त सामग्री का प्रयोग करें। यज्ञ करने से जहाँ वातावरण की शुद्धि होती है वहीं शारीरिक ऊर्जा में भी वृद्धि होती है और बच्चों में अच्छे संस्कारों का भी आधान होता है। वेद का पाठ, सत्यार्थ प्रकाश का वाचन तथा विद्वानों के उपदेश एवं भजनोपदेशकों के सुमधुर कार्यक्रम यू–ट्यूब आदि सोशल मीडिया के माध्यम से लाखों लोगों तक पहुँचाये जा सकते हैं। इस प्रकार के कार्यक्रमों से जहाँ हमारे विद्वानों, उपदेशकों, भजनोपदेशकों आदि का सदुपयोग हो सकेगा वहीं उन्हें दक्षिणा आदि से आर्थिक सहयोग प्राप्त होगा। प्रत्येक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य समाज की तरफ से घोषणा होनी चाहिए कि कोई भी जरूरतमंद व्यक्ति हमसे सम्पर्क करे तो उसकी यथाशक्ति मदद की जायेगी। आर्य समाज मंदिरों के आस–पास रहने वालों के सुख–दुःख में भी स्वयं सुरक्षित रहकर भाग लिया जा सकता है। आर्य समाज की विशेष छवि को प्रस्तुत करने का प्रयास प्राथमिकता की दृष्टि से होना चाहिए। कोरोना वायरस के संक्रमण से बचने का पूरा प्रयास करें और सरकार द्वारा जारी दिशा–निर्देशों का पूरी ईमानदारी से पालन करें क्योंकि यह दिशा–निर्देश हमारी ही सुरक्षा के लिए है। शारीरिक दूरी बनाये रखना, मुँह पर मॉस्क लगाना तथा दिन में कई बार साबुन से हाथ धोना आदि सावधानियाँ बरतना अत्यन्त आवश्यक है। इन बातों का विशेष ध्यान रखें। इसके अतिरिक्त हम जो भी कार्यक्रम करें उनको समाचार पत्रों में अवश्य प्रकाशित करायें जिससे अन्य लोगों को प्रेरणा तो प्राप्त होगी ही आर्य समाज के कार्य भी आम जनता के सामने आ पायेंगे। सोशल मीडिया के माध्यम से इस प्रकार के कार्यक्रम करके हम अपना बहुआयामी स्वरूप जनता के सामने ला सकते हैं तथा सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में अग्रणी बनकर कार्य कर सकेंगे और आर्य समाज के मुख्य उद्देश्य को पूर्ण करने में सफल हो पायेंगे। ●

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक अवश्य पढ़ें

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

दूरभाष :–011–23274771, 23260985

नक्सलवाद से कठोरता से निपटे सरकार

नक्सली हमले में शहीद हुए जवानों को आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अर्पित की भावपूर्ण श्रद्धांजलि

छत्तीसगढ़ के बीजापुर में दिनांक 3 अप्रैल, 2021 को नक्सलियों ने घात लगाकर सुनियोजित तरीके से सुरक्षा बलों पर भीषण हमला कर दिया। इस हमले में घातक हथियारों का प्रयोग किया गया था। जिसके परिणाम स्वरूप 22 जवान शहीद हो गये और अनेकों घायल होकर जीवन–मृत्यु के बीच झूल रहे हैं। यह महा हिंसक घटना इसलिए और भी चिन्ता उत्पन्न करती है कि विगत 10 दिनों के अन्दर यह दूसरी बड़ी हिंसक घटना है। इससे पूर्व 10 दिन पहले ही छत्तीसगढ़ के नारायणपुर इलाके में नक्सलियों ने सुरक्षाबलों की एक बस पर हमला करके उसे बिस्फोट से उड़ा दिया था। इस हमले में भी 5 जवान शहीद हो गये थे।

विश्व की आर्य समाजों के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने इस हिंसक घटना की कठोर शब्दों में निन्दा की है। उन्होंने कहा कि नक्सलियों का यह कृत्य अत्यन्त शर्मसार करने वाला अमानवीय कृत्य है इसकी जितनी भर्त्सना की जाये वह कम है। किसी भी समस्या का समाधान हिंसा नहीं हो सकता। समस्या का समाधान बात–चीत और परस्पर संवाद से ही हो सकता है। नक्सलवादियों द्वारा इस तरीके से देश की अर्द्धसैनिक बलों के नौजवानों की निर्मम हत्या की जा रही है इससे उन्हें कभी सफलता प्राप्त नहीं हो सकती। स्वामी जी ने कहा कि अपनी मांगों के परिप्रेक्ष्य में आन्दोलन करना सबका अधिकार है, लेकिन अपनी मांगों को मनवाने के लिए हिंसा का रास्ता किसी भी प्रकार से उचित नहीं ठहराया जा सकता। नक्सलियों को ऐसा लगता है कि बन्दूक के बल पर और जवानों को शहीद करके वे भारतीय शासन को झुकाने में सफल हो जायेंगे, यह उनका भ्रम है। इस हमले में शहीद हुए जवानों को हम विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और उनके परिवारों के प्रति सांत्वना एवं संवेदना व्यक्त करते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी पूज्य स्वामी अग्निवेश जी के बहुआयामी व्यक्तित्व तथा कृतित्व को संजोने के उद्देश्य से प्रकाशित किये जाने वाले 'स्मृति ग्रन्थ' हेतु अपने संस्मरण तथा पूज्य स्वामी अग्निवेश जी से सम्बन्धित सामग्री अतिशीघ्र भेजें

विलक्षण प्रतिभा के धनी, जुझारू व्यक्तित्व, सिद्धहस्त लेखक महर्षि दयानन्द जी की वैचारिक विरासत को आत्मसात करने वाले अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी पूज्य स्वामी अग्निवेश जी की स्मृतियों को जन–जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से एक 'स्मृति–ग्रन्थ' का प्रकाशन करने की योजना बनाई गई है। पूज्य स्वामी अग्निवेश जी सप्तक्रान्ति के मुद्दों (जातिवाद मुक्त समाज, नशामुक्त समाज, नारी उत्पीड़न मुक्त समाज, पाखण्ड मुक्त समाज, भ्रष्टाचार मुक्त समाज, अन्याय व शोषण मुक्त समाज तथा साम्प्रदायिकता मुक्त समाज) जैसे विषयों के अतिरिक्त विभिन्न सामाजिक मुद्दों दबे–कुचले लोगों के उत्थान हेतु निरन्तर संघर्षरत रहे। इसके अतिरिक्त बाल मजदूरी एवं बंधुआ मजदूरी, जैसे विषयों के साथ–साथ उन्होंने विश्व की अनेकों समस्याओं को सुलझाने के लिए अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उनके सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, शैक्षिक क्रिया कलापों से सम्बन्धित अथवा उनके प्रति आपके व्यक्तिगत विचार तथा उनके संस्मरण, उनके साथ फोटो, वीडियो आदि जो कुछ भी सामग्री आपके पास उपलब्ध हो उसे शीघ्रातिशीघ्र 7, जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली–110001 के पते पर भिजवाने की कृपा करें। जिससे आप द्वारा भेजी गई सामग्री को 'स्मृति ग्रन्थ' में उचित स्थान प्राप्त हो सके।

सार्वदेशिक सभा की ओर से नववर्ष की मंगल कामना

नव वर्ष यानि सम्वत् 2078 का आगमन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 13 अप्रैल, 2021 को होगा। इसी दिन ऋषिवर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने संसार को वेदों का ज्ञान देने और मानव मात्र की सेवा का संकल्प लेकर सर्व प्रथम आर्य समाज की स्थापना की थी। सार्वदेशिक सभा परिवार नववर्ष और आर्य समाज स्थापना दिवस के पावन पर्व पर समस्त आर्यजनों एवं पाठकों के प्रति शुभकामना प्रकट करते हुए सुख, समृद्धि तथा ऐश्वर्य की कामना करता है।

प्रिय पाठकों! इस शुभ दिवस पर महर्षि दयानन्द के ऋणों से अनृण होने का संकल्प लेते हुए आर्य समाज के पुनरोदय में सहभागी बनने का व्रत भी लें।

स्वामी आर्यवेश	पं. माया प्रकाश त्यागी	प्रो. विट्ठलराव आर्य
सभा प्रधान	कोषाध्यक्ष	सभा मंत्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत यजुर्वेद भाष्य भारी छूट पर उपलब्ध

250 रुपये मूल्य का यजुर्वेद भाष्य

मात्र 150 रुपये में दिया जा रहा है (डाक व्यय अतिरिक्त)

(जल्दी करें ग्रन्थ सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है)

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
''दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

पृष्ठ 1 का शेष

वेदों की ओर लौटने का संदेश दिया था महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने
– स्वामी प्रणवानन्द

संस्कारों के बिना शिक्षा अधूरी है – स्वामी व्रतानन्द

किसी भी राष्ट्र की नींव वहाँ के युवा होते हैं – कैलाश कर्मठ

किये। प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री कैलाश कर्मठ ने अपने ओजस्वी भजनों के माध्यम से युवा पीढ़ी का आह्वान किया कि वे अपने जीवन में चरित्र, देशभक्ति, ईश्वरभक्ति, समाजसेवा आदि गुणों को अपनाकर राष्ट्र की उन्नति करें। उन्होंने कहा कि किसी भी राष्ट्र की रीढ़ वहाँ के युवा होते हैं।

गुरुकुल महाविद्यालय पौंधा के आचार्य डॉ. धनंजय जी ने गुरुकुलों को संगठित करने एवं उनकी व्यवस्था में आमूल–चूल परिवर्तन करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि हमारे गुरुकुलों को और अधिक साधनों की जरूरत है। यदि गुरुकुलों को अच्छे साधन उपलब्ध कराये जायें तो वे शिक्षा जगत में एक ऐतिहासिक भूमिका निभा सकते हैं। साधनों की कमी होने के बावजूद भी गुरुकुल के ब्रह्मचारी आज अनेक क्षेत्रों में प्रान्त एवं राष्ट्र स्तर पर प्रतिष्ठा एवं सम्मान प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने सरकार से माँग की कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने के लिए सरकार विशेष योजना बनाये और गुरुकुलों को विपुल अनुदान देकर सशक्त करे।

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने अपने प्रवचनों के माध्यम से विविध विषयों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने मानव जाति के उपकार के लिए वेदों की ओर लौटने का संदेश दिया था। स्वामी दयानन्द जी मानते थे कि जब तक विश्व में वैदिक मान्यताओं एवं सिद्धान्तों का प्रचलन एवं प्रतिष्ठा नहीं होगी तब तक मानवता दुःख से त्रस्त रहेगी। वेद मानव मात्र के कल्याण के लिए ईश्वरीय ज्ञान के रूप में उपलब्ध हैं। वेद में किसी भी प्रकार की संकीर्णता नहीं है। अतः वेद प्रचार के द्वारा वैदिक ज्ञान जन–जन तक पहुँचाना हम सबका प्रमुख कर्तव्य है।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली तथा वर्तमान शिक्षा प्रणाली की तुलनात्मक समीक्षा करते हुए स्पष्ट किया कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली बच्चे के सर्वतोमुखी विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है। गुरुकुल से बच्चा अपनी शिक्षा पूरी करके ही घर वापिस लौटता है और वहाँ उसे शिक्षित ही नहीं बल्कि संस्कारित भी किया जाता है। जबकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में न तो नैतिक शिक्षा का कोई स्थान है और न ही बच्चे को पूर्णकालिक संस्कारों का वातावरण मिलता है। 4–6 घण्टे स्कूल में बिताने के बाद सभी बच्चे समाज के दूषित वातावरण में रहने को मजबूर हैं और वहाँ उन्हें ऐसा वातावरण नहीं मिलता जिससे उनका नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास हो सके। स्वामी आर्यवेश जी ने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को प्रेरित किया कि वे समाजसेवा एवं वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार में अपना जीवन समर्पित करें। इस समय हजारों ऐसे चरित्रवान, तपस्वी एवं त्यागी नवयुवकों की आवश्यकता है जो उच्च से उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद अपना जीवन वैदिक सिद्धान्तों के लिए समर्पित करें। स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी धर्मानन्द जी के कार्यों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की और कहा कि स्वामी जी ने लगभग 50 साल पहले इस क्षेत्र में कार्य करना शुरू किया था और आज उनकी कृपा से उड़ीसा, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, नागालैण्ड, आसाम, त्रिपुरा आदि प्रान्तों में अनेक गुरुकुल, कन्या गुरुकुल व आश्रम कार्य कर रहे हैं। इन सबका संचालन स्वामी जी महाराज की देख–रेख में हो रहा है। स्वामी जी के पुरुषार्थ से हजारों छात्र–छात्राओं ने स्नातक व स्नातिका बनकर अपने जीवन को न केवल संस्कारित किया है बल्कि अपने परिवारों में भी एक नई रोशनी शेष पृष्ठ 8 पर

आर्य केन्द्रीय सभा मेरठ, उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के जन्म दिवस एवं बोधोत्सव का चतुर्दिवसीय कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न

'बृहद प्रचार कार्यक्रम' के अन्तर्गत कई स्थानों पर किये गये विशेष आयोजन

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के ओजस्वी प्रवचन से कार्यकर्ताओं में दौड़ी उत्साह की लहर

केन्द्रीय आर्य सभा, मेरठ के तत्वावधान में दिनांक 8 से 11 मार्च, 2021 तक महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव तथा बोधोत्सव का चार दिवसीय कार्यक्रम भव्यता के साथ आर्य समाज सूरजकुण्ड में समारोह पूर्वक आयोजित किया गया। बृहद प्रचार कार्यक्रम के अन्तर्गत निरन्तर चार दिवसों तक विभिन्न स्थानों पर विशेष यज्ञ तथा प्रवचनों एवं भजनों का कार्यक्रम चलता रहा। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, आगरा से पधारे आर्य विद्वान् आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री, आर्य जगत के सुविख्यात भजनोपदेशक पं. कुलदीप आर्य, श्रीमती मुकेश आर्य, श्री सरयू प्रसाद पटेल, श्री ज्ञानमुनि वानप्रस्थ, श्री सुशील गुप्ता, श्री राजेश सेठी सहित अनेकों विद्वानों ने विभिन्न स्थानों पर अपने प्रवचनों तथा भजनों के माध्यम से आर्यजनों का ज्ञानवर्द्धन किया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ आर्य समाज सूरजकुण्ड के प्रांगण में विशेष यज्ञ के साथ प्रारम्भ हुआ। आचार्य रणधीर शास्त्री, आचार्य राजेन्द्र शास्त्री, आचार्य देव शर्मा, आचार्य दीपक शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में ऋग्वेद के 100 विशेष मन्त्रों से आहुति अर्पित करवाई गई। इस विशेष यज्ञ में यजमान पद को श्रीमती ज्योति एवं श्री सुनील आर्य, श्रीमती हर्षिता एवं श्री तेजपाल, श्रीमती कौशल्या एवं श्री सरयू प्रसाद पटेल तथा श्रीमती शशि एवं श्री देवेन्द्र गर्ग ने सुशोभित किया। इस अवसर पर आगरा से पधारे आर्य विद्वान् आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री ने अपने उद्‌बोधन में बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती धर्म की साक्षात प्रतिमूर्ति थे। महर्षि मनु द्वारा बताये गये धर्म के दस लक्षणों का उनके जीवन एवं व्यवहार में स्पष्ट दर्शन होता है। सत्य, दया, क्षमा, न्याय उनके कार्यों तथा व्यवहार में समाहित थे इसी कारण उनका प्रत्येक शब्द मानव जीवन को बदलने वाला था। आर्य जगत के सुविख्यात भजनोपदेशक पं. कुलदीप आर्य ने अपने मधुर भजनों के माध्यम से महर्षि दयानन्द जी द्वारा जीवनभर किये गये मानव कल्याण के कार्यों का दिग्दर्शन कराया। इस कार्यक्रम का संचालन श्री सरयू प्रसाद पटेल ने किया। 8 मार्च, 2021 को महिला दिवस के अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्रीमती मुकेश आर्य ने कहा कि महिला दिवस पर हमें ऋषि को नमन करना चाहिए। जिनके नारी शिक्षा एवं उत्थान हेतु किये गये कार्यों से आज महिलाओं को समस्त अधिकार प्राप्त हैं।

इसी प्रकार सी.जे.डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल शास्त्री नगर में महर्षि दयानन्द जी सरस्वती का 197वाँ जन्म दिवस

शेष पृष्ठ 6 पर

पिछले पृष्ठ का शेष

आर्य केन्द्रीय सभा मेरठ, उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का जन्म दिवस एवं बोधोत्सव का चतुर्दिवसीय कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न

अत्यन्त उत्साह के साथ मनाया गया। श्री गौरव शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में आयोजित इस यज्ञ में अनेक विशिष्ट लोग यजमान बनें जिनमें विधायक सोमेन्द्र तोमर, श्रीमती एवं श्री अरुण वशिष्ठ प्रमुख रहे।

इस अवसर पर कार्यक्रम का संयोजन करते हुए श्री राजेश सेठी ने कहा कि यदि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का आगमन इस धरा धाम पर न होता तो हमारा अस्तित्व ही समाप्त हो गया होता। उनके विचारों एवं सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार हेतु तथा वैदिक विचारधारा को नई पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए ही महात्मा हंसराज, स्वामी श्रद्धानन्द जी, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी आदि महान आत्माओं ने ऋषि के कार्यों को पूरी निष्ठा के साथ आगे बढ़ाया।

इसी श्रृंखला में अंगद गार्डन प्रवेश विहार, शास्त्रीनगर में भी महर्षि दयानन्द जी सरस्वती का जन्मदिवस एवं बोधोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर यजुर्वेद के 100 विशेष मन्त्रों से यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य रणधीर शास्त्री, श्री राजेन्द्र शास्त्री तथा श्री देव शर्मा जी ने यजमानों से आहुतियाँ दिलवाई। कार्यक्रम का संयोजन श्री सुशील गुप्ता एवं अध्यक्षता श्री ज्ञानमुनि वानप्रस्थ ने की।

11 मार्च, 2021 को मुख्य कार्यक्रम में सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने धारा प्रवाह तथा ओजस्वी उद्बोधन में आर्य समाज के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना संसार का उपकार करने के लिए की थी, यही कारण था कि उन्होंने आर्य समाज के नियमों में छठां नियम रखा 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।' अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। उनकी मान्यता थी कि कोई भी व्यक्ति समाज का उपकार तभी कर सकता है जब शारीरिक क्षमता को प्राप्त कर जीवन में आध्यात्मिकता के आधार पर आत्मिक उन्नति न कर ले तब तक व्यक्ति समाज की उन्नति व परोपकार का कार्य नहीं कर सकता। समाज के उपकार को ध्यान में रखते हुए अपने जीवनकाल में ही स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अनेक अनाथालय, विधवा आश्रम, कन्याओं की शिक्षा हेतु पाठ्शालाएँ तथा गुरुकुल खुलवाये साथ ही पाखण्ड को दूर कर नारियों के सर्वांगीण विकास एवं मानव निर्माण की योजनाएँ बनाई ताकि लोगों का किसी न किसी प्रकार उपकार हो सके। दलितों के उद्धार के पीछे भी उनका यही उद्देश्य था। स्वामी जी ने कहा कि सेवा भाव से परिपूर्ण होकर ही मनुष्य अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकता है। जब हमारे मन में सेवा व परोपकार की भावना जागृत होती है तब हम अपने को समस्त अवगुणों से मुक्त कर सेवा कार्यों में संलग्न हो जाते हैं। सेवा का भाव जागृत होने पर मन में न तो ईर्ष्या, द्वेष होता है, न अहंकार और न अहं होता है, न अभिमान, न क्रोध की भावना होती है। मात्र सेवा ही उस समय सर्वोपरि होती है।

स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज और मानव सेवा एक दूसरे के पर्याय हैं। पूर्व में जितने भी आन्दोलन हुए चाहे वह हैदराबाद का धर्मयुद्ध हो, गौहत्या के विरुद्ध आन्दोलन हो, शराबबन्दी के लिए किये गये आन्दोलन हो, सती प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन हो, दलितों के मंदिर प्रवेश के लिए किये गये आन्दोलन हों, कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध किये गये जन–जागरण हो, चाहे भूकम्प की त्रासदी हो, चाहे बाढ़ से धन–जन की हानि हो, इन सभी कार्यों में सेवा का भाव निहित था। आर्यों ने मानव मात्र की सेवा करके अपना चतुर्दिक यश फैलाया था। आज पुनः उसी प्रकार के सेवाभाव की आवश्यकता है।

स्वामी जी ने कहा कि आज आवश्यकता इस बात की है कि हम जन–सामान्य से जुड़ें तथा लोगों के दुःख–दर्द के साथी बनें। अपने आस–पास जब किसी व्यक्ति को कष्ट होता है, समस्या होती है तो हमें उसके कष्टों को दूर करने के लिए उसके पास होना चाहिए। जब हम सामान्यजनों की सहायता करेंगे और अपने साथ जोड़ेंगे तो हमारे प्रत्येक आन्दोलन और प्रत्येक कार्य में उनको सहयोगी बना पायेंगे। हम समय–समय पर कार्यक्रम आयोजित करके सामूहिक रूप से वेद मत के विषय पर वार्ता करें और अन्धविश्वास, कुरीतियों तथा समाज में फैले धार्मिक पाखण्ड पर विशेष विचार रखें। अन्य विषयों पर भी विवेकपूर्ण प्रकाश डालें जैसे – दहेजप्रथा, रिश्वतखोरी, धार्मिक पाखण्ड, भ्रष्टाचार, महिला उत्पीड़न आदि महत्त्वपूर्ण विषयों पर जन–जागरण करें तथा द्वार–परिवारों, गली–मोहल्लों और गाँव में वेद ज्योति को जलायें तथा वेद ज्ञान का अमृत सभी को प्राप्त हो ऐसी योजनाएँ बनायें। मानव और मानवता हेतु जीवन का यही मुख्य कार्य है।

स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन सामाजिक सुधार, राष्ट्र निर्माण, मानव निर्माण व वेद प्रचार हेतु अर्पित कर दिया था। आज उसी प्रकार के संघर्ष, त्याग, तपस्या और संकल्प की आवश्यकता है। हम सब में वही जोश, उत्साह, पुरुषार्थ, लगन, तड़प और मिशनरी भावना का उदय हो जिससे हम आर्य समाज को पुनः बुलन्दी तक पहुँचा सके।

इस अवसर पर आर्य जगत के तपोनिष्ठ संन्यासी गुरुकुल प्रभात आश्रम के आचार्य पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज ने अपने आशीर्वचन द्वारा उपस्थित आर्यजनों को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन से प्रेरणा लेने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में महर्षि दयानन्द जी, आर्य समाज एवं वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार की महती आवश्यकता है। समाज में बढ़ रही विविध कुरीतियों पाखण्ड तथा अन्धविश्वासों, अश्लीलता एवं चरित्रहीनता की आंधी को रोकने के लिए आर्यजनों को संकल्पित होना चाहिए। स्वामी जी के आशीर्वचन के उपरान्त आर्य समाज की सन् 1925 में मथुरा में आयोजित अर्द्धशताब्दी समारोह में आर्य नेताओं के द्वारा दिये गये ऐतिहासिक व्याख्यानों का संकलन एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित कर विमोचन कराया गया। कार्यक्रम के उपरान्त ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था की गई थी। मेरठ की समस्त आर्य समाजों और अन्य आर्य समाजों से आये आर्यजनों ने इस कार्यक्रम में उत्साह के साथ भाग लिया।

सार्वदेशिक सभा द्वारा चारों दर्शनों एवं संस्कार विधि का पुनर्प्रकाशन

भाष्यकार तर्क शिरोमणि – स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

1. वेदान्त दर्शन	– पृष्ठ 232 –	मूल्य 100 रुपये
2. वैशेषिक दर्शन	– पृष्ठ 248 –	मूल्य 100 रुपये
3. न्याय दर्शनम्	– पृष्ठ 240 –	मूल्य 100 रुपये
4. सांख्य दर्शन	– पृष्ठ 156 –	मूल्य 80 रुपये
5. संस्कार विधि	– पृष्ठ 278 –	मूल्य 90 रुपये

बढ़िया कागज, सुन्दर प्रिंटिंग व आकर्षक टाइटल के साथ 25 प्रतिशत छूट पर सभा कार्यालय में उपलब्ध है।

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

''दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

13 अप्रैल पर विशेष

अमृतसर की खूनी बैसाखी से क्षुब्ध हुए अमर शहीदों का बलिदान

- रामबिहारी विश्वकर्मा

अंग्रेज हमारे देश में व्यापारी के रूप में आये और भारत की जनता ने 'अतिथि देवो भव' की परम्परा के अनुसार इन व्यापारियों को सब प्रकार की सुविधाएं दीं। लेकिन धीरे-धीरे इन व्यापारियों ने देश में फूट डालकर उसके टुकड़े-टुकड़े करके अपना कब्जा जमा लिया। 1857 में भारतीय सिपाहियों ने पहली बार विद्रोह करके भारत माँ को विदेशी दासता से मुक्ति दिलाने का प्रयास किया लेकिन वे विफल रहे। महाराष्ट्र में वासुदेव बलवन्त फड़के ने 1873 में युवा समाज का संगठन शुरू किया। जगह-जगह व्यायामशालाएं खोलीं। इस क्रान्तिकारी को राजद्रोह के आरोप में आजीवन कारावास की सजा दी गई लेकिन युवकों ने खासतौर पर गरमपंथी विचारधारा वाले युवकों ने यह निश्चय कर लिया कि इस देश को आजादी भीख मांगने से नहीं मिलेगी। उनका दृढ़ विचार था कि स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे हम लेकर रहेंगे।

भारत में अंग्रेजों ने तथाकथित शासन सुधार लाने के लिए लार्ड साइमन की अध्यक्षता में एक कमीशन नियुक्त किया था। यह कमीशन 3 फरवरी, 1928 को जब भारत पहुंचा तो पूरे देश में हड़ताल रखी गई। और जगह-जगह ''साईमन गो बैक'' के नारे लगाये गये। लाहौर में नौजवान भारत सभा के सदस्यों ने भी नारे लगाने की योजना बनाई। तत्कालीन पुलिस अधीक्षक स्काट ने असिस्टेंट सान्डर्स को रास्ता साफ करने की जिम्मेदारी सौंपी। लाहौर में लाला लाजपतराय और नौजवानों की टोली पर सान्डर्स ने लाठी बरसायी। लाला लाजपतराय को इतनी चोट लगी कि कुछ दिनों पश्चात् चोट के कारण उनकी मृत्यु हो गई। भगतसिंह ने इस दुखद घटना पर प्रस्ताव रखा कि लाला जी पर जो लाठियां बरसाई गयी हैं। उसी के कारण उनकी मृत्यु हुई है। इससे समूचे राष्ट्र का अपमान हुआ है। और नौजवान भारत सभा इस अपमान का बदला लेकर रहेगी। उन्होंने लाठी चलाने वाले पुलिस सुपरिटेंडेंट स्काट को गोली का निशाना बनाने का निश्चय किया। लाला लाजपतराय की मृत्यु के एक महीने के बाद चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राजगुरू और जयगोपाल ने पुलिस स्टेशन के सामने सान्डर्स को गोलियों से भून डाला। वे मारना तो चाहते थे स्काट को जिसने सान्डर्स को लाठी चार्ज का आदेश दिया था। लेकिन दोनों का आकार-प्रकार ऐसा था कि पहचानने में कुछ भूल हो गई और भ्रमवश उन्होंने सान्डर्स को मार डाला। इस तरह उन्होंने लाला लाजपतराय की मृत्यु का बदला ले लिया। इन जवानों ने भारत माँ की बेड़ियां काटने के लिए अपने पैरों में बेड़ियाँ डाल लीं।

23 वर्ष की उम्र में भगत सिंह एक युगपुरुष बन गये थे। अपने खून से उन्होंने स्वतन्त्रता के जिस पौध कोसींचा वह विशाल वृक्ष बन गया। भगत सिंह को वीरता का यह सबक पुश्तैनी तौर पर प्राप्त हुआ था। एक बार जब वे छोटे थे और छोटे-छोटे तिनके जमीन में गाड़ रहे थे तो उनके पिता सरदार किशन सिंह ने पूछा कि बेटे तुम क्या कर रहे हो तो तुतलाती आवाज में भगत सिंह ने कहा कि बुबुकें बो रहा हूँ। यानि बंदूके बो रहा हूँ। उनका परिवार पिछली दो पीढ़ियों से विदेशी सरकार के खिलाफ संघर्ष कर रहा था। ऐसे परिवार में भगतसिंह जैसे क्रान्तिकारी विचारों वाले बालक का जन्म लेना स्वाभाविक ही था। भगत सिंह 10-11 साल की उम्र में ही बहुत ही चिन्तनशील हो गये थे। वह धर्म के गहन विषयों की आलोचना करने में सक्षम हो गये थे। 1919 में 13 अप्रैल को बैसाखी के दिन अमृसर क जलियांवाला बाग में एक सभा में करीब 20 हजार स्त्री-पुरुष, बच्चे इकट्ठे हुए थे। इसी बीच लैफ्टिनेंट सर ओडायर ने 100 हिन्दुस्तानी और 40 अंग्रेज सिपाहियों के साथ वहां प्रवेश किया। करीब 16 सौ राउण्ड फायर किये गये, जलियांवाला बाग में लाशें पट गईं। उस समय भगतसिंह 12 वर्ष के थे। वह पढ़ने गये थे, लेकिन वह दृश्य देखकर उन्होंने खून से भीगी मिट्टी उठाई और माथे से लगाकर उसे एक छोटी सी शीशी में भर लिया। घर पहुंचने पर अपनी बहन को वह शीशी दिखाई और शीशी के चारों ओर फूल रखकर सिर झुकाया। 14 वर्ष की उम्र में ही उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और स्वतंत्रता के आन्दोलन में कूद पड़े। उनके अन्दर अद्‌भुत संगठन शक्ति तो थी ही, व्यवहार कुशल भीथे। इसी बीच 5 फरवरी 1922 को गोरखपुर के चौरी चौरा स्थान पर लोगों की भीड़ ने थानेदार और सिपाहियों को थाने में बन्द करके आग लगा दी। क्रान्तिकारियों के मन में यह निश्चय हो गया कि अंग्रेजों के कान बहरे हो चुके हैं। वे शान्ति की भाषा सुन नहीं पाते। बहरों को सुनाने के लिए ऊची आवाज की जरूरत होती है इसीलिए उन्होंने अंग्रेजों का ध्यान आकर्षित करने के लिए और उनके बहरे कानों में सुनाई देने लायक आवाज बुलन्द करने का निश्चय किया। उन्होंने एसेम्बली में बम फेंकने की योजना बनाई। एसेम्बली में 8 अप्रैल 1929 को वायसराय के फैसले की घोषणा की जाने वाली थी। भगतसिंह और बटूकेश्वर दत्त खाकी कमीज और नेकर पहनकर वहां पहुंच गये। उन्होंने अखबार में लिपटा हुआ बम सरकारी बेंचों के पीछे खाली जगह पर फेंक दिया। उसके बाद दूसरा बम भी फेंका। उन्होंने पिस्तौल से दो गोलियां भी छोड़ी। दोनों वहां खड़े रहे और नारा लगाया इन्कलाब जिन्दाबाद दूसरा नारा गूंजा साम्राज्यवाद का नाश हो। उन्होंने एसेम्बली में पर्चे भी फेंके जिस पर अंग्रेजी में लिखा हुआ था, बहरों को सुनाने के लिए ऊँची आवाज की जरूरत होती है। बम फेंकने के बाद भगत सिंह तथा बटूकेश्वर दत्त आसानी से भाग कर बच सकते थे मगर वे शांत चुपचाप खड़े रहे। पुलिस जब उन्हें कोतवाली ले जाने लगी तो उन्होंने फिर नारा लगाया, 'इन्कलाब जिन्दाबाद' दूसरा नारा गूंजा 'साम्राज्यवाद का नाश हो।' भगत सिंह केवल क्रान्तिकारी ही नहीं थे वे अध्ययनशील और दार्शनिक विचारों वाले व्यक्ति थे। उनसे जब न्यायालय में पूछा गया कि क्रान्ति से आपका आशय क्या है तो उन्होंने कहा, क्रान्ति से हमारा प्रयोजन है अन्याय पर आधारित वर्तमान व्यवस्था में परिवर्तन। उन्होंने आगे कहा, पूंजीपति, शोषक और समाज पर घुन की तरह जीने वाले लोग करोड़ों रुपया पानी की तरह बहाते हैं। वहीं दूसरी ओर शानदार महलों का निर्माण करने वाले लोग गन्दी बस्तियों में रहते हैं ऐसा समाज किस काम का? इसे बदलना होगा। भगत सिंह ने न्यायालय के समझ नई सामाजिक व्यवस्था की जो रूपरेखा दी वह बड़े-बड़े दार्शनिकों को भी सोचने के लिए बाध्य करती है कि इतनी कम उम्र में इस व्यक्ति ने गहन चिन्तन-मनन का समय भला कब निकाला होगा?

असेम्बली में विस्फोट के मूल में उद्देश्य अपने क्रान्तिकारी विचारों को लोगों तक पहुंचाना था। उनके वक्तव्य उस समय के प्रचलित अखबारों में प्रकाशित हुए, उनकी नई विचार पद्धति के साथ जोशीली भाषा और कष्ट झेलने के लिए आगे बढ़ना यह देखकर सारा देश उनके प्रति आकृष्ट हुआ। उन्होंने कहा था कि हम ये जानते हैं कि पिस्तौल और बम इन्कलाब नहीं लाते। इन्कलाब की तलवार विचारों की सान पर तेज होती है, हमने बम का धमाका करके यही प्रकट करना चाहा है। हमारे इन्कलाब का अर्थ पूंजीवाद और पूंजीवादी युद्धों के कष्टों को समाप्त करना है। उन्होंने न्यायाधीश के सामने स्पष्ट किया कि अगर बम फेंकने वालों का सही दिमाग न होता तो वे खाली जगहों की बजाय बेंचों पर बम फेंकते, लेकिन उन्होंने सही जगह चुनने की जो हिम्मत दिखाई है, उसके लिए उन्हें ईनाम मिलना चाहिए। 12 जून 1921 को हुए असेम्बली बम कांड के मुकदमें में भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त को आजीवन कारावास दिया गया। भगत सिंह जेल से ही अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए जनक्रान्ति करते रहे।

लम्बी भूख हड़ताल की। भगतसिंह ने कहा कि हम इस शर्त पर भूख हड़ताल तोड़ेंगे कि हम सबको एक साथ रहने का मौका दिया जाये। जेल अधिकारियों ने उनकी बात मान ली और उन्हें दाल और फुल्का दिया गया। उस समय भी उन्होंने अपनी जिद मनवाई। आजादी के इन दीवानों को देखने के लिए देश भर से लोग पेशी के दिन अदालत में जाते थे और वहां 'वन्देमातरम्' और 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारों से आसमान गूंज उठता था।

लाहौर जेल में ही बटुकेश्वर दत्त, अजय घोष, जितेन्द्र सान्याल, यतीन्द्र नाथ दास भी रखे गये थे। इसी बीच सान्डर्स हत्याकाण्ड का मुकदमा भी 10 जुलाई 1929 से शुरू हुआ। भगत सिंह को हथकड़ी लगाने की जब बात हुई तो उन्होंने कहा कि एक क्रान्तिकारी को पुलिस के सिपाही के साथ हाथ बांध कर ले जाया जाये ये न्याय के खिलाफ है और उन्होंने भूख हड़ताल कर दी। न्यायाधीश जब कुर्सी पर बैठते थे तो चारों ओर नारे और राष्ट्रीय गीत गूंजने लगता था, ''सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है। देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है। वक्त आने पर बता देंगे तुझे ऐ आसमां। हम अभी से क्या बताएं क्या हमारे दिल में है''।

जिस समय मृत्यु की भयानक काली छाया मंडरा रही थी, उस समय भी आजादी के इन दीवानों की हंसी और अट्टहास गूंजता रहता था। भगत सिंह कई बार ऐसा व्यंग्य छेड़ते थे या कोई ऐसा पेंचीदा सवाल उठा देते थे कि मजिस्ट्रेट भी चकरा जाते थे। मुकदमें की कार्यवाही 3 महीने तक चलती रही और दुनिया भर के मुकदमों के इतिहास में शायद लाहौर षड्यन्त्र केस ही ऐसा है जिसमें फैसला उस दिन सुनाया गया जिस दिन न अभियुक्त अदालत में हाजिर थे, न गवाह और न वकील। अदालत ने खुद आरोप लगाया और खुद ही फैसला दिया। फैसले में भगतसिंह, राजगुरू और सुखदेव को फांसी की सजा सुनाई गई, 7 को कालेपानी की सजा, एक को सात वर्ष की सजा और एक को तीन वर्ष की सजा दी गई। भगत सिंह को मृत्यु से तनिक भी भय न था, उन्हें न तो व्यक्तिगत चिन्ता थी और न कोई दुःख था।

भगतसिंह जेल में अध्ययन करते रहते थे। हर पत्र में वे पुस्तकों को ही मांग करते थे। पुस्तकों के साथ-साथ वह यहां तक लिख देते थे, कि पुस्तकालय के रजिस्टर में उस पुस्तक का कितना नम्बर है। उन्होंने चार्ल्स डिकेन्स, रीड मेम्सबेनी, गोर्की, मार्क्स, उमर खैयाम, आस्कर वाइल्ड, जार्ज बनार्ड शा और लेनिन आदि का गहन अध्ययन किया था। जब वे अपनी कोठरी में इधर से उधर घूमते थे तो कभी-कभी पुस्तकें छोड़कर मधुर स्वर में गा उठते थे, ''माँ मेरा रंग दे बसन्ती चोला। इसी रंग में रंग के शिवा ने माँ का बंधन खोला।'' उन्हें राष्ट्र और राष्ट्रवासियों की इतनी चिन्ता थी कि उसके सामने अपने कष्टों का कुछ ध्यान ही नहीं था, जेल में ही उन्होंने 'आत्मकथा', मौत के दरवाजे पर, समाजवाद का आदर्श और स्वाधीनता की लड़ाई में पंजाब का पहला उभार जैसी पुस्तकें लिखीं। कुछ पुस्तकें तो छप गई लेकिन कुछ नहीं छप पाई। जेल में जब कोई मिलने आता था तो कभी-कभी वह कहते थे अगर मैं इन्कलाब जिन्दाबाद का नारा देश के कोने-कोने तक पहुंचा सका तो समझूंगा कि मेरे जीवन का मूल्य मिल गया। उन्होंने जेल से युवकों के नाम सन्देश भेजा था जिसमें अपनी राजनीतिक विचारधारा को स्पष्ट किया था। उन्होंने अपने बारे में कहा था, यह बात प्रसिद्ध की गई है कि मैं आतंकवादी हूँ परन्तु मैं आतंकवादी नहीं हूँ, मैं एक क्रान्तिकारी हूँ जिसके कुछ निश्चित विचार-आदर्श और लम्बा कार्यक्रम है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि हम बम और पिस्तौल से कोई लाभ प्राप्त नहीं कर सकते। हमारा मुख्य लक्ष्य यह है कि मजदूरों और किसानों का संगठन हो।'' भगतसिंह के बलिदान का क्षण ज्यों-ज्यों नजदीक आ रहा था, वह प्रसन्नता और उत्सुकता के साथ उस क्षण की प्रतीक्षा कर रहे थे। अपने छोटे भाई कुलतार सिंह को लिखे पत्र में उन्होंने कहा था- ''फिर जन्म लूँ और मातृभूमि की और सेवा कर सकूँ'' मृत्यु के प्रति उनकी निर्भीकता को देखकर लगता था कि जैसे वह इन्सान नहीं फरिश्ता है। जब उनसे कहा गया कि आखिरी वक्त अपने वाहे गुरु का नाम ले लो और 'गुरुवाणी' का पाठ कर लो तो भगतसिंह ने कहा, ''आखिरी वक्त आ गया है, मैं परमात्मा को याद करूँ तो वह कहेंगे कि यह बुजदिल है, तमाम उम्र तो इसने मुझे याद नहीं किया और मौत सामने नजर आने लगी है तो मुझे याद करने लगा है। लोग यही कहेंगे कि आखिरी वक्त मौत को सामने देखकर इसके पांव लड़खड़ाने लगे।'' जब फांसी की सजा दी गई तो भगतसिंह बीच में थे, अगल-बगल सुखदेव और राजगुरु थे। तीनों मिलकर साथ-साथ गाते हुए चलने लगे, दिल से निकलेगी ना मर कर भी वतन की उल्फत, मेरी मिट्टी से भी खुशबुए वतन आयेगी।

भगत सिंह ने मजिस्ट्रेट को देखकर कहा था 'आप बहुत भाग्यशाली हैं कि आपको यह देखने को नसीब हो रहा है कि भारत के क्रान्तिकारी किस तरह खुशी-खुशी अपने उच्च आदर्शों के लिए मौत को गले लगाते हैं।' उनके पैरों पर न कंपकंपी थी, न चेहरे पर घबराहट। फांसी की फंदा पकड़कर उसे चूम कर तीनों ने एक साथ गर्जना की, ''इन्कलाब जिन्दाबाद'' साम्राज्यवाद मुर्दाबाद। उस समय शाम के सात बजकर 30 मिनट थे। इन तीनों क्रान्तिकारियों को समूचा देश उनकी निर्भीकता और राष्ट्रवाद की अदम्य भावना के लिए सदैव याद रखेगा।

(पूर्व निदेशक, आकाशवाणी केन्द्र, नई दिल्ली)

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पृष्ठ 4 का शेष

गुरुकुल आश्रम महाविद्यालय आमसेना उड़ीसा का वार्षिक समारोह 8 व 9 मार्च, 2021 को उत्साह के साथ मनाया गया

पैदा की है। स्वामी धर्मानन्द जी आर्य जगत के वीतराग संन्यासी हैं और उनके कार्यों से सभी नवयुवकों को प्रेरणा लेनी चाहिए। समारोह में राज्यसभा के सदस्य श्री सुजीत कुमार सिंह, स्थानीय विधायक श्री राजू भाई ढोलकिया जी एवं अन्य संगठनों तथा आर्य समाजों के अधिकारियों ने पधारकर अपना योगदान दिया।

9 मार्च, 2021 को गुरुकुल के ब्रह्मचारियों एवं ब्रह्मचारिणियों ने जहां विविध गणवेश पहनकर सैनिक परेड की, वहीं पर अचम्भित करने वाले व्यायाम दिखाकर उपस्थित हजारों लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया। व्यायाम प्रदर्शन में जहाँ पी.टी. योगासन, दण्ड बैठक, मलखम्भ, रस्सी मलखम्भ, लेजियम, डम्बल, लाठी, भाला, तलवार, कमर से बांधकर लोहे की जंजीर तोड़ना, छाती पर पत्थर तुड़वाना आदि के अतिरिक्त कमाण्डो प्रशिक्षण की भी हैरतअंगेज गतिविधियाँ प्रस्तुत की। आतंकवादियों से कैसे लड़ा जाता है यह भी छात्रों ने प्रस्तुत कर दिखाया। इस पूरे समारोह का संचालन स्वामी धर्मानन्द जी महाराज के सान्निध्य में गुरुकुल के आचार्य और महावैद्य स्वामी व्रतानन्द जी, गुरुकुल के उपचार्य डॉ. कुंजदेव मनीषी, कन्या गुरुकुल की आचार्या पुष्पा वेदश्री, गुरुकुल कोसरंगी छत्तीसगढ़ के आचार्य डॉ. कोमल कुमार जी, ब्रह्मचारी मनुदेव वाग्मी जी, श्री राकेश, वयोवृद्ध उड़िया विद्वान पं. विशिकेशन शास्त्री आदि के अतिरिक्त विभिन्न गुरुकुलों के आचार्य एवं अध्यापिकाओं की विशेष भूमिका रही।

इस अवसर पर आचार्य मनुदेव द्वारा संपादित 'मनोज स्वरांजलि' पुस्तक तथा वार्षिक स्मारिका 'खिलते फूल' का विमोचन भी किया गया।

इस अवसर पर परम मित्र मानव कल्याण ट्रस्ट की ओर से तीन विद्वानों का सम्मान भी किया गया और उन्हें धनराशि तथा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। स्मृति चिन्ह एवं प्रशस्ति पत्र स्वामी आर्यवेश जी और स्वामी प्रणवानन्द जी ने प्रदान किये तथा धनराशि स्वामी धर्मानन्द जी के कर–कमलों से प्रदान की गई। सम्मानित होने वाले विद्वानों में नव–प्रभात आश्रम गुरुकुल के आचार्य बृहस्पति जी, गुरुकुल नरसिंहनाथ के आचार्य बुद्धदेव जी तथा गुरुकुल कोसरंगी छत्तीसगढ़ के आचार्य कोमल कुमार जी के नाम उल्लेखनीय हैं। समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ़ के प्रधान श्री अवनी भूषण पुरंग, रायगढ़ के डॉ. राम कुमार पटेल आदि भी सम्मिलित हुए। स्वामी धर्मानन्द जी ने सभी विद्वानों एवं सहयोगियों का धन्यवाद करते हुए कहा कि गुरुकुलीय शिक्षा के बिना संस्कृति सुरक्षित नहीं रह सकती। उन्होंने कहा कि देशभर में गुरुकुलों का जाल बिछाना चाहिए। गुरुकुल शिक्षा से ही विद्यार्थियों को संस्कार एवं नैतिक मूल्यों से ओत–प्रोत किया जा सकता है। स्वामी व्रतानन्द जी ने अपने धन्यवादी उद्बोधन में कहा कि सभी परिस्थितियाँ विपरीत होने के बावजूद आप सबके सहयोग से और विशेष रूप से स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी के आगमन से हमारा उत्सव पूरे उत्साह के साथ सम्पन्न हो रहा है। उन्होंने सभी सहयोगियों का भी धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।